तेरहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! चंद्रहृदय नाम नगरी है. और उस जगह का रनधीर(१) नाम राजा था. उसकी नगरी में धर्मध्वज नाम एक सेठ था. और उसकी बेटी का नाम शोभनी;(२) पर अति सुंदरी. जवानी उसकी दिन बदिन बढ़ती थी; और रूप उसका पल पल अधिक होता था.

इत्तिफ़ाक़न, उस नगरी में रातों को चोरी होने लगी. जब चोरों के हाथ से महाजनों ने बज़्त दुख पाया; तब इकट्ठे हो, राजा के निकट जाकर, सब ने कहा महाराज! चोरों ने नगर में बज़्त ज़ुलम किया है. हम इस शहर में अब रह नहीं सकते. राजा ने कहा ख़ैर जो ज़्आ सो ज़्आ. लेकिन अब आगे दुख न पाओगे. मैं उनका यत्न करता हूं. यह कह, राजा ने बज़्त से लोग बुलवा चौकी को भेज दिये; और चौकी पहरे का ढब उन को बता दिया. और ज़्कम किया कि जहां चोरों को पाओ, बिना पूछे मार डालो.

लोग रात को नगर की रखवाली करने लगे. उस पर भी, चोरी होती थी. सारे साहूकार, इकट्ठे होकर, राजा के पास आये; और अर्ज़ की महाराज! आप ने पहरए भेजे, तौ भी चोर कम न ज़ुए; और रोज़ चोरी होती है. राजा ने कहा इस वक़्त तुम रुख़्सत हो. आज

(१) रणधीर. (२) शोभना.

की रात से नगर की चौकी देने मैं निकलूंगा. यह सुनके राजा से बिदा हो, वे अपने अपने घर गये. और जिस वक़्त कि रात ज़ुई, राजा अकेला ढाल तलवार ले, प्यादा नगरी की रक्षा करने लगा. इस में आगे जाके देखे तो एक चोर साम्हने से चला आता है. राजा उसे देखकर पुकारा, तू कौन है? वह बोला कि मैं चोर हूं; तू कौन है? राजा ने कहा मैं भी चोर हूं. यह सुन, वह ख़ुश होके बोला आओ, मिलकर चोरी करने चलें.

यह बात आपस में ठहरा, राजा और चोर, बातें करते ज़ुए, एक महल्ले में पैठे; और कितने एक घरों में चोरी कर, माल मताअ़ ले नगर के बाहर निकल, एक कुए पर आये; और उस में उतर पाताल पुरी में जा पहुंचे. वह चोर, राजा को दरवाज़े पर खड़ाकर, धन दौलत अपने मंदिर में ले गया. इतने में उसके घर में से एक दासी निकली. वह राजा को देखके कहने लगी महाराज! तुम कहां इस दुष्ट के साथ यहां आये. ख़ैर इसमें है कि वह आने न पावे, और तुम से जहां तलक भागा जाय भागो; नहीं तो वह आतेही तुम्हें मार डालेगा. राजा ने कहा मैं तो राह नहीं जानता; किधर को जाऊं. फिर उस चेरी ने बाट दिखा दी. और राजा अपने मंदिर को आया.

ग़रज़, दूसरे दिन राजा ने, सब अपनी सेना साथ ले, उस कुए की राह पाताल पुरी में जाकर, चोर का तमाम घर बार घेर लिया. और वह चोर, कोसी और

राह से निकल, उस नगरी का मालिक जो देव था, उसके पास गया; और अरज़ की कि एक राजा मेरे मारने को घर पर चढ़ आया है. या तुम मेरी इस समैं सहाय करो; नहीं तुम्हारी पुरी का बास छोड़ और नगर में जा बसता हूं. यह सुन, राक्षस ने खुश होकर कहा तू मेरे लिये खाने को लाया है; मैं तुझसे बहुत खुश हुआ. यह कह कर, जहां राजा कटक लिये हवेली घेरे हुए था, वहां वह देव आ, आदमियों को और घोड़ों को खाने लगा. और राजा उस देव की सूरत देखकर भागा. और जिन लोगों से भागा गया वे तो बचे. और बाक़ियों को देव ने खाया.

ग़रज़, राजा अकेला भागा जाता था; कि चोर ने आकर ललकारा तू राजपूत होकर लड़ाई से भागता है. यह सुनते ही, राजा फिर खड़ा हुआ. और दोनों सन-मुख हो युद्ध करने लगे. निदान राजा, उसे बसकर, मुशकें बांध, नगर में ले आया. फिर उसको निहलवा धुलवा, अच्छे अच्छे बस्त्र पहरा, एक ऊंट पर बिठला, ढंढोरिया साथ कर, सारी नगरी के फेरने को भेजा; और सूली उसके वास्ते खड़ी करने का हुकम किया. इस में शहर के लोगों में से जो उसे देखता था सो कहता था, कि इसी चोर ने तमाम नगर लूटा है. और अब इसे राजा सूली देगा.

जब कि उस धर्मध्वज सेठ की हवेली के नीचे वह चोर गया, तो उस सेठ की बेटी ने, ढंढोरे की आवाज़ सुन,

अपनी दासी से पूछा, यह काहेकी डोंडी बाजती है. वह बोली जो चोर इस नगर में चोरी करता था, उसे राजा पकड़ लाया है. अब सूली देगा. यह सुन के, देखने को वह भी दौड़ी आई. चोर का रूप जोबन देखतेही, मोहित हो गई; और अपने बाप से आकर कहा, तुम इस समैं राजाके पास जाओ; और उस चोर को छुड़ा लाओ. सेठ बोला, कि जिस चोर ने राजा का तमाम नगर मूसा है, और जिस के लिये सारा कटक कटा, उसे मेरे कहे से क्योंकर छोड़ेगा. फिर उसने कहा जो तुम्हारे सर्वस दिये से भी राजा उसे छोड़े तो तुरन्त तुम उसे छुड़ा लाओ; और जो वह न आवेगा, तो मैं भी अपनी जान दूंगी.

यह सुन सेठ ने राजा से जाकर कहा महाराज! पांच लाख रुपये मुझ से लीजिये, और इस चोर को छोड़ दीजिये. राजा बोला इस चोर ने सारा नगर मूसा और तमाम लशकर इसके सबब से ग़ारत हुआ. इसे मैं किसी तरह से न छोडूंगा. जब राजा ने उसकी बात न मानी, लाचार फिर यह अपने घर को आया; और अपनी बेटी से कहा, जितना कहने का धरम था उतना मैं ने कहा; लेकिन राजा ने न माना.

इतने अरसे में, चोर को, नगरी के फेरे दिलवाकर, सूली पास ला खड़ा किया. और चोर ने उस बनिये की बेटी का अहवाल जो सुना, पहले खिलखिलाकर हंसा; फिर डकरा डकरा रोने लगा. इतने में लोगों ने उसे सूली पर खेंच लिया. और बनिये की बेटी, उसके मरने

की ख़बर पाकर, सती होने के लिये उसी जगः पर आई. चिता बनवा, उस में बैठ, उस चोर को सूली से उतार, उस का सिर गोद में रख, जलने को बैठी चाहे कि उसमें आग दिलवावे, इत्तिफ़ाक़न, वहां एक देवी का मंदिर था, उसमें से तुरन्त देवी निकलकर बोली ऐ पुत्री ! मैं तुष्ट ऊई तेरे साहस पर; तू बर मांग. वह बोली माता जो तू मुझसे तुष्ट ऊई है, तो इस चोर को जीदान दे. फिर देवी बोली इसी तरह से होवेगा. यह कह, पताल से अमृत ला चोर को जिला दिया.

इतनी कथा कह, बैताल ने पूछा ऐ राजा! बताओ कि चोर पहले किस कारन हंसा, और पीछे किस लिये रोया. राजा ने कहा जिस वास्ते हंसा वह बात मैं जानता हूं. और जिस लिये रोया वहभी मुझे मअ़लूम है. सुन बैताल! चोर ने जीमें बिचारा, यह जो मेरे वास्ते अपना सर्वस राजा को देती है, अब इसका मैं क्या उपकार करूंगा. यह समझकर वह रोया. फिर अपने मनमें बिचारा कि मरने के समैं उसने मुझ से प्रीति की. भगवान की गति कुछ जानी नहीं जाती. कुलच्चने को दे लक्ष्मी; कुलहीन को देवे बिद्या; मूरख को दे सुंदर स्त्री; पहाड़ पर बरसावे बरषा. ऐसी ऐसी बातें सोचकर हंसा. यह सुन, बैताल फिर उसी पेड़ पर जा लटका. राजा फिर वहां गया; और उसे खोल, गठरी बांध, कांधे पर रख, ले चला.

चौदहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम ! कुसमावती(१) नाम एक नगरी है. वहां का सुबिचार नाम राजा. जिसकी बेटी का नाम चद्रप्रभा. जब वह बरयोग ऊई, तब एक दिन, बसंत ऋतु में, सखियों को साथ ले, बाग़ की सैर को चली. वहीं ज़नाने के बंदोबस्त से पहले, एक ब्राह्मण का लड़का, बरस बीस एक का, अति सुन्दर, मनस्वी नाम कहीं से फिरता ऊआ, उस बाग़ में आ, एक बृक्ष के नीचे ठंडी छांह पाकर सो रहा था. राजा के लोगों ने आ, उस बाड़ी में ज़नाने का बंदोबस्त किया. पर इत्तिफ़ाक़न, उस बह्मनेटे को किसी ने न देखा. और वह उस दरख़्त के नीचे सोता रहा. और राजकन्या अपने लोगों समेत बाग़ में दाख़िल ऊई. सहेलियों के साथ सैर औ तमाशा देखती ऊई कहां आती है कि जहां वह बह्मनेटा सोता था. इस का वहां पहुंचना, कि वह भी लोगों के पांव के आहट से उठ बैठा. दोनों की चार नज़रें ऊईं; और कामदेव के ऐसे बस ऊए, कि उधर ब्राह्मण का लड़का मूरछा खा भूमि पर गिरा; इधर बेसुध हो राजकन्या के पांव कांपने लगे. पर वोंहीं उसे सखियों ने हाथों हाथ थाम लिया. निदान, चंडोल में लिटा घर को ले आईं. और यहां ब्राह्मण का लड़का ऐसा बेसुध पड़ा था, कि अपने तन मन की कुछ ख़बर न रखता था.

---

(१) कुसुमवती.